संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0975-735X

शोध दिशा

57

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

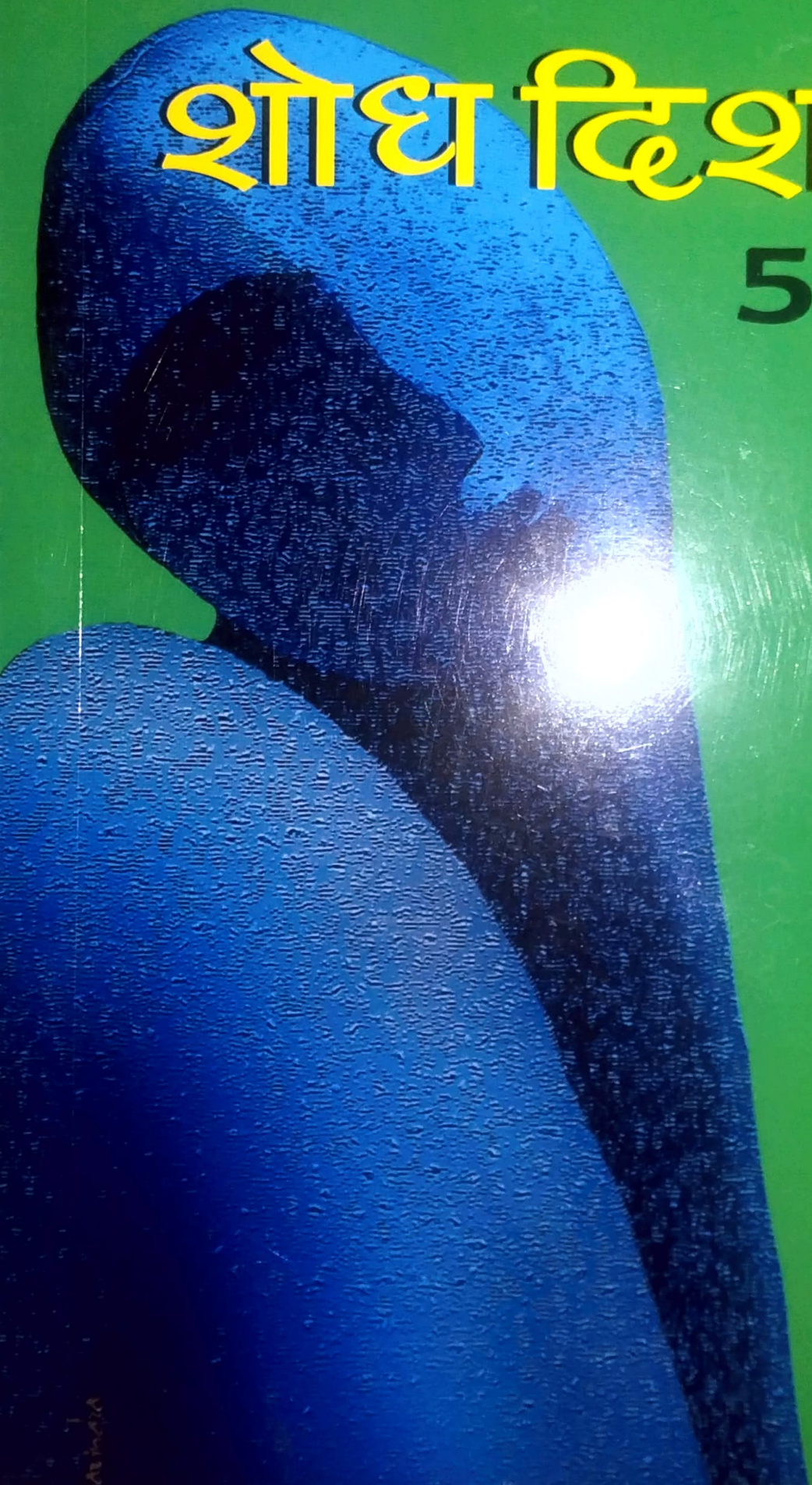

शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त
UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता-प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 57 जनवरी-मार्च 2022 300.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 0124-4076565, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ० मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन०सी०आर०
डॉ० अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ० शंकर क्षेम
प्रमोद सागर

उपसंपादक
डॉ० अशोककुमार
डॉ० कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

शुल्क
आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : छह हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : आठ सौ रुपए
यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

डॉ॰ रामविलास शर्मा के पत्रों में झाँकता उनका व्यक्तित्व ('कवियों के पत्र' पुस्तक के संदर्भ में)

डॉ॰ सरोज बाला
असिसटेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
एस॰एल॰बावा डी॰ए॰वी॰ कॉलेज, बटाला (गुरदासपुर) पंजाब

मनुष्य के चिंतन मनन और विचारों ने भाषा को जन्म दिया और भाषा के माध्यम से मनुष्य ने अपने मन की अनुभूतियों, भावों एवं विचारों को मौखिक और लेखन-प्रक्रिया से संप्रेषित किया है। सभ्यता के विभिन्न चरणों में जैसे-जैसे मनुष्य उन्नति की ओर अग्रसर होता गया वैसे-वैसे उसकी जीवनशैली में भी परिवर्तन हुआ। उसके परिवार में वृद्धि हुई, वृद्धि होने से आवश्यकताएँ बढ़ीं और उन्हें पूरा करने के लिए वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने लगा। यह क्रम प्राचीनकाल से आज तक चल रहा है। आज भी कितने परिवार के सदस्य धन कमाने के लिए अपने परिवारों से दूर विदेशों में चले जाते हैं। मनुष्य की इस भ्रमरशीलता में संचार-माध्यमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है जिनमें पत्रलेखन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अनौपचारिक पत्रों का साहित्य के क्षेत्र में भी बहुत अधिक महत्त्व है। साहित्यिक क्षेत्र में लिखे गए पत्रों में साहित्यकार या रचनाकार की भावनाएँ एवं विचार तो व्यक्त होते ही हैं, साथ ही उनके व्यक्तित्व की विविध प्रवृत्तियों का भी बोध होता है। उसके चरित्र, संस्कार, दृष्टिकोण व आचरण आदि पर प्रकाश पड़ता है। हिंदी के प्रसिद्ध लेखक श्री हरिशंकर शर्मा ने पत्रों के महत्त्व के संबंध में लिखा है कि 'यों सब चिट्ठियाँ, चाहे वे कलात्मक न भी हों, हृदय की भाषा होने के कारण महत्त्वपूर्ण और उपयोगी होती हैं। उनसे नि:संदेह किसी का भाव, स्वभाव, प्रभाव और व्यक्तित्व जानने में बड़ी सहायता मिलती है।'[1] यह सर्वमान्य है कि पत्र-लेखन एक कलात्मक ढंग है। 'रूपसी की चिट्ठी', बंदी के पत्र, पिता के पत्र पुत्री के नाम और 'कवियों के पत्र' आदि ऐसी रचनाएँ हैं जिनमें इस कला को उत्कृष्टता प्राप्त हुई है। डॉ॰ रामविलास शर्मा द्वारा लिखित 'कवियों के पत्र'[2] नाम पुस्तक में उनके द्वारा लिखे पत्रों और अन्य कवियों एवं साहित्यकारों द्वारा उन्हें लिखे विविध पत्रों से डॉ॰ शर्मा के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश पड़ता है जिनसे उनके व्यक्तित्व की असंख्य प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं।

घनिष्ठता एवं अपनत्व का भाव

यदि एक लेखक, कवि या रचनाकार के संबंध अन्य साहित्यकारों से घनिष्ठ एवं अपनत्व से परिपूर्ण हो तो उसका प्रभाव उसकी रचना-प्रक्रिया पर श्रेष्ठ रूप से पड़ता है। 'कवियों के पत्र' पुस्तक में कवियों द्वारा जितने भी पत्र डॉ॰ रामविलास शर्मा को लिखे गए हैं तथा लेखक द्वारा उन कवियों को जो पत्र लिखे गए हैं, उनसे यह ज्ञात होता है कि डॉ॰ रामविलास शर्मा के अन्य कवियों एवं साहित्यकारों से बहुत घनिष्ठ एवं संवेदना-संपन्न संबंध थे। कवि मैथिलीशरण गुप्त, दिनकर, अज्ञेय, गिरिजाकुमार माथुर, शिवमंगलसिंह सुमन, केदारनाथ अग्रवाल, सुभद्राकुमारी चौहान आदि के साथ उनकी घनिष्ठता एवं अपनत्व परिलक्षित होती है। प्रस्तुत पुस्तक में पहला पत्र मैथिलीशरण गुप्त द्वारा डॉ॰ रामविलास शर्मा को लिखा गया है जिससे पता चलता है कि उस समय वे 'हंस' पत्रिका के कविता विभाग का संपादन कर रहे थे और उन्होंने कवि मैथिलीशरण गुप्त को अपना कोई आलेख 'पत्रिका' में प्रकाशनार्थ भेजने के लिए आग्रह किया था। परंतु कवि मैथिलीशरण गुप्त उस समय प्रगतिवाद पर आलेख भेजने में असमर्थ थे। इस पत्र से इस बात का भी बोध होता है कि डॉ॰ रामविलास शर्मा पहले लखनऊ रहते थे तत्पश्चात वह आगरा चले गए थे। इस पत्र में कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने लिखा है कि 'आज के प्रगतिवाद में मैं तो अपने को स्वयं पिछड़ा हुआ अनुभव करता हूँ। मेरे संस्कार भी अन्य प्रकार के हैं। शरीर भी शिथिल पड़ गया है।'[3] डॉ॰ रामविलास शर्मा इस पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं कि गुप्त जी द्वारा उक्त वक्तव्य में विनम्रता का प्रदर्शन एवं साथ ही व्यंग्य भी किया गया है। जबकि वे हर विषय को लिखने में सक्षम लेखक थे। इससे लेखक में दूसरों की विशेषताओं को देखने का सकारात्मक दृष्टिकोण भी परिलक्षित होता है।

इन पत्रों में डॉ॰ रामविलास शर्मा की घनिष्ठ मित्रता शिवमंगल सिंह 'सुमन' और केदारनाथ अग्रवाल से झलकती है। ये मित्र यौवन से लेकर वृद्धावस्था तक की यात्रा पारस्परिक मेल-मिलाप से तय करते हैं। इस पुस्तक में इन मित्रों में सन् 1943 से 1998 तक की अवधि में पत्राचार होता रहा है। वे आपस में अपने पारिवारिक और साहित्यिक गतिविधियों से जुड़कर एक-दूसरे के प्रेरणास्रोत बनते हैं।

बहुमुखी प्रतिभासंपन्न

इस पत्र-संग्रह का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि डॉ॰ रामविलास शर्मा का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा-संपन्न था जिसमें ज्ञान, स्नेह, संवेदनशीलता, सच्ची मित्रता, सृजनात्मकता, कर्मठता, उदारता एवं सकारात्मक सोच रूपी मोती सदैव समाहित रहते थे। डॉ॰ विलास के उच्च विचारों का पता उनके द्वारा केदारनाथ अग्रवाल को लिखे पत्र से भी चलता है। वे लिखते हैं-'यो जागार तं ऋच: कामयन्ते-जो जागता है, उसे ऋचाएँ चाहती हैं। यो जागार तं उ सामानियन्ति-जो जागता है, सामगीत उसके पास आते हैं। यो जागार तं अयं सोम आह जो जागता है उससे यह सोम कहता है : तब अहं अस्मिसख्ये निओक- तुम्हारी मित्रता में मेरा घर है। (ऋग्वेद : 5.44.14)'[4] तीन बार 'जागार' की अर्थगरिमा पर जोर दिया गया है। इस प्रकार 'ऋग्वेद' का अनुकरण करते हुए डॉ॰ रामविलास का मानना था कि जो कवि या लेखक जागरूक होता है, वह कवि होने के साथ-साथ योगी भी होता है उसे ऋचाओं के पीछे नहीं दौड़ना पड़ता अपितु सामगीत उसके पास स्वयं आते हैं। डॉ॰ रामविलास का आचरण भी एक जागरूक कवि एवं योगी जैसा था।

मानवीयता से ओतप्रोत

प्रस्तुत पुस्तक में संकलित पत्रों से स्पष्ट होता है कि डॉ॰ रामविलास शर्मा का व्यक्तित्व मानवीय गुणों से भरपूर है। वह किसी के दु:ख में चिंतित होते हैं और सुख में प्रसन्न रहते हैं। सभी को उच्चस्तरीय परामर्श एवं सांत्वना देते हैं। जब डॉ॰ रामविलास शर्मा को अपने परममित्र केदारनाथ के यहाँ चोरी होने की सूचना मिलती है तो वह चिंताजनक अवस्था में उन्हें दिनांक 9.12.91 को पत्र लिखते हैं और कई सुझाव देते हैं-'यह जानकर दुख हुआ कि तुम्हारे यहाँ चोरी हो गई थी। संतोष की बात इतनी है कि तुम्हारे शरीर को क्षति नहीं पहुँची। बांदा के लिए चोरी,

ISSN 0975-735X
ISSN 0975-735X

डकैती, कत्ल नई चीज नहीं हैं। समय ऐसा है, पैसे के लिए लोग कुछ भी कर सकते हैं। अच्छा हो कि तुम किसी भरोसे के आदमी को पास सुलाया करो।"[5] लेखक अजय तिवारी अपने गृहस्थी से परेशान हैं। चदबलीसिंह के पुत्र का आपरेशन होना है और उन्हें अन्य पारिवारिक चिंताएँ भी हैं। इन बातों से भी डॉ॰ रामविलास बहुत दु:खी होते हैं और उन्हें सही परामर्श देते हैं ताकि उनकी समस्याओं का समाधान हो सके।

उनके छोटे भाई रामस्वरूप चौबे जब तख्त से सोते हुए नीचे गिरकर सिर पर चोटग्रस्त होते हैं तो लेखक स्वयं अस्वस्थ होने पर भी उनके स्वास्थ्य का हाल पूछने अस्पताल जाता है। बीच बीच में अपने पुत्र को भी वहाँ कुशलता जानने हेतु भेजता है। हरियाणा में चार सौ छात्र और अभिभावकों के जलकर मरने का समाचार सुनकर भी लेखक बहुत दुखी होता है और इस घटना पर शोक व्यक्त करते हुए अपने मित्र केदारनाथ को भी बताता है। अस्वस्थ होने के कारण जब लेखक अपने मित्र केदारनाथ के 84वें जन्मदिन पर 'बांदा' पहुँचने पर असमर्थ होता है तो अपने मन की अनुभूतियों एवं उद्‌गारों को दिखाते हुआ पत्र में लिखता है–'अंतरराष्ट्रीय महत्त्व की तारीख पहली अप्रैल को तुम चौरासी पूरे करोगे और पचासी में प्रवेश करोगे। इस अवसर पर समझना कि तुम्हारे आँगन में टहलते हुए हम तुम्हें गले लगा रहे हैं।"[6]

इस उदाहरण में स्पष्ट है कि डॉ॰ रामविलास शर्मा का व्यक्तित्व मानवीयता, आत्मीयता और सुंदर अनुभूतियों से परिपूर्ण था।

उत्तरदायित्व से परिपूर्ण और सत्यवादी

कवि केदारनाथ और लेखक शिवमंगल 'सुमन' के पत्रों में लेखक के व्यक्तित्व की एक विशेषता यह उभरकर सामने आती है कि वह निडर होकर सही को सही और गलत को गलत कहने वाले और स्वयं के जीवन में सच का निर्वाह करने वाले हैं। लेखक अपने जीवन के प्रत्येक दायित्व को बखूबी निभाता रहा है। चाहे वह दायित्व अपने परिवार के प्रति हो, साहित्य के प्रति या फिर अपने मित्रों के प्रति हो। कवि केदारनाथ को जो पत्र डॉ॰ रामविलास शर्मा ने लिखे उनसे उनके परिवार के सदस्यों की जानकारी प्राप्त होती है। लेखक के परिवार में दो बेटे-संतोष और विजय हैं। संतोष के दो बेटे–तन्मय ओर चिन्मय हैं, जो लेखक के पोते हैं। तीन बेटियाँ–शोभा, प्रियसेवा, और स्वाति हैं। लेखक का बड़ा पोता तन्मय बंगलौर में टाटा आई॰बी॰एम॰ से स्थायी पद पर आसीन है और चिन्मय ने सन् 95 में मैनेजमेंट की शिक्षा पूर्ण कर ली थी। गर्मियों की छुट्टियों में बहु-बेटियों, बेटे, पोता, नाती सब इकट्ठे होकर परिवार में चहल-पहल बढ़ा देते हैं। लेखक ने पिता होने के नाते परिवार के सभी दायित्व निभाए। सबको उच्च शिक्षित किया। उनके जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी कीं। 4 जून, 1991 को दिनकर ने जो पत्रलेखक को लिखा उसमें उनकी 'उर्वशी' पुस्तक पर समीक्षा लिखने का अनुरोध किया गया था परंतु उस पर लिखने में लेखक को कुछ पारिवारिक बाधाएँ थीं। उस समय वह एक पिता का दायित्व निभा रहे थे क्योंकि उनकी बेटी प्रियसेवा बीमार थी। दिनकर जी पत्र में लिखते हैं, 'यह जानकर बहुत चिंतित हुआ कि आपकी बच्ची बीमार है और आप इस व्ययसाध्य रोग के चक्कर में हैं। माफ कीजिए, मैंने आपको असमय टोक दिया। क्षय की असाध्यता तो अब नहीं रही, किंतु रोगी और अभिभावक, दोनों को अत्यंत मनोयोगपूर्वक इलाज की प्रक्रिया पूरी करनी पड़ती है। सो लिखने-पढ़ने की बात तो अभी भूल ही जाइए।" जब यह पत्र दिनकर जी द्वारा लिखा गया तब लेखक कहीं और ध्यान न देकर केवल अपनी बेटी का इलाज और उसकी देख-भाल कर रहा था। इस प्रकार डॉ॰ शर्मा ने अपने पारिवारिक दायित्व में कभी मुँह नहीं मोड़ा। इसी पारिवारिक प्रेम के कारण ही डॉ॰ रामविलास शर्मा भयंकर बीमार होने के बावजूद घर-परिवार द्वारा पूरे मन से सेवा करने पर स्वस्थ हो जाते हैं।

एक लेखक का दायित्व निभाते हुए उन्होंने साहित्य-जगत जो अनमोल रचनाएँ प्रदान की हैं, ऐसी रचनाएँ युगों-युगों तक प्राप्त कर सकता दुर्लभ हैं। इस पत्र-संग्रह में कोई ऐसा पत्र नहीं जो यह न कह रहा हो कि लेखक के जीवन में साहित्य-लेखन कभी रुका नहीं, वह निरंतर प्रवाहमय रहा है। इस प्रकार डॉ॰ रामविलास शर्मा ने आजीवन अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का पालन पूर्ण निष्ठा एवं परिश्रम से किया है।

उदार-हृदय

प्रस्तुत पुस्तक (कवियों के पत्र) में संगृहीत पत्रों से विदित होता है कि डॉ॰ शर्मा विद्वान होने के साथ-साथ अच्छे इंसान भी हैं। उनके समकालीन साहित्यकारों एवं कवियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध हैं और वह प्रत्येक को अपना प्रोत्साहन एवं सहयोग उदार हृदय से देते हैं। किसी की लिखी हुई रचना की प्रशंसा करना और उसका सही मूल्यांकन करना बहुत बड़ी बात होती है। लेखक को जिस भी रचनाकार की जो भी रचना अच्छी लगती है, वह उसकी अपार भाव से प्रशंसा करते हैं, उन्हें साहित्य-लेखन के लिए प्रोत्साहित करते हैं। पुस्तक की भूमिका में लेखक ने प्रतिष्ठित कवि मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान, दिनकर, सुमित्रानंदन पंत, अज्ञेय, शमशेर सिंह, शिवमंगल सिंह 'सुमन', केदारनाथ, महादेवी वर्मा, नागार्जुन, गिरिजाकुमार 'माथुर' आदि की भरसक प्रशंसा की है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों पक्षों की सराहना की है जिससे उनके अपने व्यक्तित्व की उदारता का ज्ञान होता है। कवि मैथिलीशरण की प्रशंसा करते हुए लेखक कहते हैं, 'मैथिलीशरण गुप्त ने सबसे बड़ा काम यह किया था कि उन्होंने ब्रजभाषा के स्थान पर हिंदी कविता में खड़ीबोली को प्रतिष्ठित किया। उनके व्यक्तित्व की एक विशेषता उनके काव्य-साहित्य में नहीं दिखाई देती। वह यह है कि वह स्वभाव से बहुत ही विनोदप्रिय व्यक्ति थे। हँसी-मजाक के बिना वे बात न करते थे। वह उदार विचारों के व्यक्ति थे। उन्होंने 'कर्बला' पर रचना की, 'मार्क्स की पत्नी' पर कविता लिखीं और महाभारत आदि काव्यों से विषय लेकर उन्होंने 'जयद्रथ वध' और 'साकेत' जैसी रचनाएँ कीं।"[8] अपने मित्र केदार को दिनांक 16 अप्रैल 1994 में लेखक ने जो पत्र लिखा उसमें उनकी कविताओं की प्रशंसा एवं मूल्यांकन सटीक रूप से किया है। कवि शिवमंगलसिंह 'सुमन' को डॉ॰ शर्मा ने दिनांक 26.02.1962 को जो पत्र लिखा उसमें दिनकर की सराहना की है।

इस प्रकार उक्त पत्रों के उदाहरणों से प्रामाणित हो जाता है कि डॉ॰ रामविलास शर्मा का व्यक्तित्व उदारता से ओतप्रोत था। वे अपने मित्र कवियों की नि:स्वार्थ भाव से प्रशंसा किया करते थे। उनके आग्रह पर स्वयं लेखनकार्य तो करते ही उन्हें भी साहित्य-लेखन के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करते थे।

सच्चे सलाहकार

कवि शमशेरबहादुर सिंह के द्वारा लेखक को लिखे गए पत्रों से डॉ॰ रामविलास शर्मा के व्यक्तित्व की यह प्रवृत्ति भी दिखाई देती है कि वह एक सच्चे सलाहकार और लोगों के लिए मार्गदर्शक थे। रचनाकारों एवं साहित्यकारों को उसकी बुद्धिमत्ता, वस्तुनिष्ठ सोच-क्षमता एवं

ISSN 0975-735X
ISSN 0975-735X

न्यायपरक दृष्टिकोण पर बहुत विश्वास था और सभी कवि अपनी लिखी रचनाओं और अपने पारिवारिक मुद्दों पर उनसे राय लेना अपना परम कर्त्तव्य मानते थे। कवि शमशेर बहादुर सिंह अपने एक पत्र में लिखते हैं, 'मैंने कहा उनसे कि हिंदी वालों में किसी का भी विश्वास न करो। (जहाँ तक मैं जानता हूँ) सिर्फ दो व्यक्ति हैं जिनसे तुम्हें सही सलाह-मशविरा भी मिलेगा और जिनकी बातों पर पूरी तरह आश्वस्त होकर विश्वास किया जा सकता है। वह डॉ॰ महादेव भाई और डॉ॰ रामविलास।"[9]

कवि शमशेर ने अपने इस पत्र में डॉ॰ शर्मा को सच्चा परामर्शकर्ता घोषित किया है। इस पुस्तक के अनेक पत्रों को पढ़ने से स्पष्ट होता है कि डॉ॰ रामविलास शर्मा उच्चकोटि के सच्चे सलाहकार थे जिन्होंने कभी किसी को भ्रमित नहीं किया अपितु अपनी योग्य राय देकर समस्त रचनाकारों एवं अपने मित्रों का उद्धार ही किया है।

निरंतर अध्ययनशील

'कवियों के पत्र' पुस्तक में संकलित पत्रों से लेखक के व्यक्तित्व की यह प्रवृत्ति भी उभरकर सामने आती है कि वे आजीवन निरंतर अध्ययनशील रहे। लेखन-प्रक्रिया उनके दिनचर्या का अभिन्न अंग था। वे अध्यापनकार्य में रहते हुए, गृहस्थ में रहते हुए और सेवानिवृत होने के बाद भी स्वाध्यायी और निरंतर अध्ययनशील रहे। इस पुस्तक में कवि मैथिलीशरण गुप्त, अज्ञेय, शमशेर बहादुर सिंह, शिवमंगलसिंह 'सुमन', नागार्जुन, सुभद्राकुमारी चौहान आदि द्वारा लिखे पत्रों में डॉ॰ रामविलास शर्मा सदैव अपने अध्ययनशीलता और साहित्य-लेखन में व्यस्त दिखाई देते हैं। वे असाधारण विद्वता के स्वामी नजर आते हैं। ऐसा लगता है कि जैसे ईश्वर ने उन्हें हिंदी साहित्य जगत को उनकी रचनाओं रूपी अनमोल रत्न प्रदान करने हेतु बनाया हो। यह बात सिद्ध हो चुकी है कि उन्होंने अपनी कलम से जो असंख्य रचनाएँ लिख डाली हैं उससे हिंदी साहित्य उनका अत्यंत आभारी है। डॉ॰ रामविलास शर्मा स्वयं तो अपना लेखनकार्य निरंतरता से करते ही थे, साथ ही उन्हें अपने समय के विविध साहित्यकारों एवं कवियों की रचनाओं पर समीक्षा हेतु भी अनुरोध किए जाते थे। डॉ॰ शर्मा किसी को कभी भी उनकी रचनाओं पर अपनी राय देने या समीक्षा करने या अनुवाद करने के लिए मना नहीं करते थे। प्रतिष्ठित कवि अज्ञेय ने 'तारसप्तक' और प्रतीक, संप्रति पत्रिकाओं के लिए जब-जब डॉ॰ रामविलास शर्मा से कविताएँ, लेख एवं वक्तव्य माँगे तब-तब उन्होंने लिखकर भेजे। सुमित्रानंदन पंत ने भी जब 'रूपाभ' पत्रिका के लिए कोई कविता, लेख या अनुवाद माँगा तब ही डॉ॰ शर्मा ने उन्हें लिखकर भेजा। इसके अतिरिक्त हंस, समालोचना आदि के लिए भी लेखनकार्य करते रहे चाहे उस समय उनकी कई पुस्तकें लेखन-प्रक्रिया से गुजर रही थीं। इस प्रकार डॉ॰ शर्मा अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक अध्ययनशील रहे और उन्होंने कालजयी रचनाएँ साहित्य-जगत को प्रदान की हैं।

प्रेरणास्रोत

डॉ॰ रामविलास शर्मा अपने समय के कवियों को साहित्य-लेखन के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित भी किए करते थे। जीवन में किसी का प्रोत्साहन और प्रेरणा व्यक्ति को उसकी मंजिल तक पहुँचा सकता है। डॉ॰ रामविलास शर्मा तत्कालीन कवियों एवं लेखकों को प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देने के लिए उन्हें उनकी रचना के विषय का नाम तक भी निश्चित कर दिया करते थे। यहाँ तक कि जब-जब किसी रचनाकार ने उन्हें अपनी रचना की समीक्षा करने को कहा या विचार माँगे। डॉ॰ शर्मा ने शीघ्र-अति-शीघ्र उनका कार्य करके उन्हें आगामी रचना करने के लिए तैयार भी किया। ऐसे साहित्यकार का व्यक्तित्व सदियों तक अपना प्रभाव दूसरों पर बनाए रखने में सक्षम होता है। डॉ॰ रामविलास शर्मा अपने व्यक्तित्व की विशिष्टताओं के कारण अमर हो गए हैं। वे अपने मित्र केदार को लेखन-हेतु प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं, 'किसी को बुलाकर जो मन में आए, बोल दिया करो, वह टेप कर लिया जाएगा और निबंधों का संकलन तैयार हो जाएगा। नाम रखना-'समय काटे नहीं कटता'।"[10] इस प्रकार कई कवि-मित्र उन्हें अपना प्रेरणास्रोत मानते थे। कवि शिवमंगल सुमन पत्र में लिखते हैं, 'तुम तो आज भी मेरे लिए प्रेरणा के अदम्यस्रोत हो। अवधी में लिखे पत्रों का प्रकाशन का तुम्हारा आदेश सिर माथे पर।"[11] इस प्रकार डॉ॰ शर्मा प्रति सम्मान उनके इर्द-गिर्द के कवियों, लेखकों जिनमें अधिकांश उनके मित्र भी थे, उनमें अगाध एवं व्यापक था। लेखक जो भी उन्हें लिखने के लिए प्रेरित करते वे अवश्य लिखते थे।

पत्र-सँजोने, संगीत सुनने और क्रिकेट मैच देखने के शौकीन

इस पुस्तक में डॉ॰ शर्मा के व्यक्तित्व का एक विशेष पहलु उभरता है कि वह पत्रों को सँजोकर रखने, संगीत सुनने और क्रिकेट मैच देखने के शौकीन थे। डॉ॰ शर्मा ऐसे व्यक्तिहैं जिन्होंने केवल विपुल साहित्य-लेखन ही नहीं किया अपितु सामाजिक एवं पारिवारिक रिश्तों में घनिष्ठता बनाए रखी और अपने मनोरंजन के लिए भी समय निकाला जिससे उन्हें पुन: स्फूर्ति प्राप्त होती थी। वे सार्वभौमिक व्यक्तित्व के मालिक थे। साहित्य में पत्रों का बहुत महत्त्व होता है जिनसे उनमें जुड़े व्यक्तियों के संबंधों का पता चलता है विशेषकर साहित्यकारों का पत्राचार। डॉ॰ शर्मा ने इन पत्रों को अनेक कठिनाइयों के बावजूद सँजोकर रखा। उन्होंने अपने पास सोलह कवियों के लगभग 191 और अपने 40 पत्र सँभालकर रखे थे, जिससे इस पुस्तक का प्रकाशन संभव हो पाया। इन पत्रों में डॉ॰ शर्मा के व्यक्तित्व के अतिरिक्त इन 16 कवियों के आचरण पर भी बखूबी प्रकाश पड़ता है। साहित्य और संगीत का संबंध घनिष्ठ है। इन पत्रों में दृष्टव्य है कि डॉ॰ शर्मा उच्चकोटि के साहित्यकार होने के साथ-साथ संगीत सुनने में रुचि रखते हैं। उनको संगीत से मानसिक शक्ति मिलती है। उनका यह भी मानना है कि जब व्यक्ति अस्वस्थ भी हो तो संगीत सुनने से उसे राहत मिलती है। इन पत्रों से स्पष्ट होता है कि उन दिनों (सन् 61) आस्ट्रेलिया-वेस्टइंडीज एवं भारत के क्रिकेट मैच चल रहे हैं। लेखक अपनी किशोर अवस्था में मैच मैदान में देखते थे अब टी॰वी॰ पर देखते हैं, अगर टी॰वी॰ की सुविधा उपलब्ध न हो तो वे रेडियो पर ही कमेंटरी श्रवण करते हैं। इस पर डॉ॰ रामविलास शर्मा ने अपने जीवन को नीरस न रखकर सदैव उसका रसास्वादन किया है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि 'कवियों के पत्र' नामक पुस्तक के इन पत्रों में लेखक के उच्चकोटि के साहित्यकार, समीक्षक, कवि संपादक आदि होने के प्रमाण भी मिलते हैं। डॉ॰ रामविलास शर्मा हंस, समालोचक पत्रिका के कविता विभाग का संपादन करते रहे। वे अपने समकालीन साहित्यकारों को इन पत्रिकाओं के लिए साहित्यिक-सामग्री लिखने की प्रेरणा भी देते हैं। इन पत्रों में लेखक द्वारा लिखित आस्था और सौंदर्य, भाषा और समाज, निराला की साहित्य-साधना, कवियों में पत्र, भारतीय-दर्शन, व्यंग्यात्मक एवं अन्य कविताएँ, आत्मकथा-'अपनी धरती अपने लोग' के तीन खंडों की सूचना भी मिलती है। उन्होंने कवि दिनकर कृत 'कुरूक्षेत्र' रचना पर अपनी प्रतिक्रिया लिखी और कवि हरिवंशराय बच्चन द्वारा अनुवादित मैकबैथ, ओथोलो और

ISSN 0975-735X

ISSN 0975-735X

शेक्सपियर की रचनाओं पर भी अपनी समीक्षात्मक प्रतिक्रियाएँ और सहमति दी। डॉ॰ रामविलास के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उन्हें जब भी पुरस्कार पर जो धनराशि प्राप्त हुई, वे उसे साक्षरता पर लगाने के मंतव्य से उसका उत्सर्ग कर देते थे। लेखक के व्यक्तित्व की अथाह एवं व्यापक विशिष्टताएँ आधुनिक संदर्भ में बहुत प्रासंगिक हैं। अगर आज के रचनाकार उनका अनुसरण करते हुए अपने व्यक्तित्व को सकारात्मक दृष्टिकोण से ओतप्रोत कर सृजनात्मकता एवं हिंदी साहित्य-लेखन की ओर बढ़ेंगे तो निश्चय ही हमारी युवापीढ़ी और राष्ट्र का कल्याण होगा और हमारी भारतीय संस्कृति एवं साहित्य समृद्ध तथा कालजयी रहेगा।

संदर्भ

1. हरिशंकर शर्मा, चतुर्वेदी बनारसीदास एवं हरिशंकर शर्मा, (संपादक), पद्मसिंह शर्मा के पत्र, आत्माराम एंड संस, दिल्ली, 1956, पृ॰ 9
2. रामविलास शर्मा, कवियों के पत्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2000, पृ॰ 47-275
3. वही, पृ॰ 47
4. वही, पृ॰ 129-30
5. वही, पृ॰ 139
6. वही, पृ॰ 158
7. वही, पृ॰ 57
8. वही, पृ॰ 8
9. वही, पृ॰ 109
10. वही, पृ॰ 274

10, करण विहार, लेन नं॰ 3
डायमंड एवेन्यू, मजीठा रोड
अमृतसर (पंजाब) 143001
मो॰ 7888850641
sarojsarma7474@gmail.com

ISSN 0975-735X